DH-001-001202 Seat No. _____

B. A. (Sem. II) Examination

March - 2022

Hindi : Paper-2

(Adhunik Hindi Kaavya - Panchvati & Vyakaran)
(Compulsory)
(Old Course)

Faculty Code : 001
Subject Code : 001202

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : (१) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।
(२) प्रश्नों के अंक दाहिनी ओर दर्शाये गये हैं ।

१ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व का रेखांकन करते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का परिचय दीजिए । १४

अथवा

१ खण्डकाव्य के लक्षणों की चर्चा करते हुए 'पंचवटी' का मूल्यांकन कीजिए । १४

२ 'पंचवटी' काव्य का संदेश अपने शब्दों में वर्णित कीजिए । १४

अथवा

२ क्या आप राम को 'पंचवटी' काव्य का नायक मानते हैं ? क्यों ? सविस्तार उत्तर दीजिए । १४

३ ''पंचवटी' काव्य में भावपक्ष और कलापक्ष का सुभग समन्वय हुआ है ।' इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए । १४

अथवा

३ 'पंचवटी' काव्य में वर्णित सीता के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । १४

४ ''पंचवटी' काव्य की शूर्पणखा विदेशी और विकासिनी नारी का प्रतिनिधित्व करती है' इस कथन की समीक्षा कीजिए । १४

अथवा

૪ 'पंचवटी' प्रबंध में व्यक्त आदर्श राजनीति पर लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में चर्चा कीजिए । १४

૫ निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** के उत्तर दीजिए । १४

(१) पल्लवन कीजिए ।

'चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुंजगा'

(२) संक्षेपण कीजिए ।

भाषा राष्ट्र की एकता का प्रमुख वाहन है । भाषा की सहायता के बीना हम निकटस्थ व्यक्ति को भी नहीं बुला सकते । किन्तु भाषा ही एकमात्र साधन नहीं है, जो राष्ट्र में एकता रखता हो । अतः हमें भाषा की साधना करते समय अन्य साधनो की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए । भाषा की आवाज उठाते समय प्रादेशिकता और साम्प्रदायिकता की भावना से हमें बचना चाहिए । अच्छा तो यह होगा कि हम भाषा को कल्याण साधन करनेवाली माता के समान समझें । जिस प्रकार गृह–परिवार के जीवन में माता कल्याण स्थापना करती है, वैसे ही भाषा भी हमकों मिलाती है । जिस प्रकार सच्ची माता सन्तानों के भेद–विभेद को दूर किए बिना नहीं रह सकती, उसी प्रकार सच्ची राष्ट्रभाषा और सच्चा साहित्य भी अपनी सन्तान का भेद–विभेद दूर किए बिना नहीं रह सकता ।

(३) गुजराती में अनुवाद कीजिए ।

जो विद्याभ्यासी पढ़ता है और पुस्तकों से मैत्री स्थापित करता है, उसकी स्थिति सामाजिक दृष्टि से चाहे कितनी ही दीन–हीन हो किन्तु उसे संगी–साथी की कमी महसूस नहीं होती । उसकी छोटी–सी कुटिया में विश्वबंध विभूतियों का निवास होता है । उसे महान कवियों, लेखकों तथा तत्वचिन्तकों की सहानुभूति प्राप्त होती है और उसकी समस्याएँ सरलता से एक हो जाती है ।

(४) हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

મનુષ્યમાં મમત્વ પ્રધાન છે. પ્રત્યેક મનુષ્ય સુખ ઇચ્છે છે. માત્ર વ્યક્તિઓના સુખના કેન્દ્રો જુદાં જુદાં હોય છે. કેટલાક સુખને ધનમાં જુએ છે, કેટલાક સુખને મદિરામાં જુએ છે, કેટલાક સુખને વ્યભિચારમાં જુએ છે, કેટલાક ત્યાગમાં જુએ છે, પણ સુખ દરેક વ્યક્તિ ઇચ્છે છે કોઈ પણ વ્યક્તિ સંસારમાં પોતાની ઇચ્છાનુસાર એવું કામ નહિ કરે, જેનાથી દુઃખ મળે. આ જ મનુષ્યની મનઃપ્રવૃત્તિ છે અને તેના દૃષ્ટિકોણની વિષમતા છે. સંસારમાં એટલા માટે પાપની એક પરિભાષા નથી થઈ શકી અને નથી થઈ શકવાની. આપણે ન તો પાપ કરીએ છીએ કે ન પુણ્ય કરીએ છીએ. આપણે માત્ર એ જ કરીએ છીએ. જે આપણે કરવું પડે છે.